41. संजीव की कहानियों में कृषक वर्ग — 364
अर्पणा आइस्तक

42. भीष्म साहनी की कहानियों में चित्रित सांप्रदायिकता की समस्या — 377
तहसीर फात्मा

43. सामाजिक समस्याओं का खुलासा: लघु कथाएँ — 392
डॉ. रजित एन.

44. श्याम सखा 'श्याम' कृत समय के साथ–साथ की समीक्षा उत्तर–आधुनिकता के संदर्भ में (लघुकथा–संग्रह) — 398
वर्षारानी जबडे

45. तुलनात्मक अध्ययन और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा — 403
डॉ. सुधा त्रिवेदी

46. समकालीन विमर्श एवं हिंदी भाषा — 410
डॉ. अमरेंद्र कुमार श्रीवास्तव

47. हिंदी भाषा और संप्रेषण (पुस्तक समीक्षा) — 417
डॉ. हरदीप कौर

48. विश्व पटल पर हिंदी का आधिपत्य — 419
सरसिज कुमार सिंह

49. साहित्य के आइने में–ललित निबंध — 429
डॉ. नादिया सी. राज

50. रेखाचित्र — 443
टी. एस. ममता

51. लोकगीतों में पंछी दूत — 463
नीता दौलतकर

52. पत्रकारिता और समकालीन साहित्य — 472
डॉ. धनंजय चव्हाण

53. हिंदी पत्रकारिता: एक सम्यक् मूल्यांकन — 480
दुर्गेश सिंह

लेखक/संपर्क सूत्र — 489

1

विविधताएँ

डॉ. पियूषकुमार श्रीवास्तव

जिस देश के क्षितिज में विविधताओं का इन्द्रधनुष ही न बनता या प्रकट होता हो उस देश का रूप क्या, स्वरूप क्या, उसकी सुन्दरता क्या और कुल मिलाकर उसका भविष्य क्या? विविधताएँ ही तो सचमुच जीवन को सुंदरता प्रदान करती हैं। सूरज की किरणों में सातों रंग न हों, बाग–बगीचों में अलग रंग के फूल न खिलें, अलग– अलग रंग की तितलियाँ और अलग– अलग रंग के पक्षी न दिखलाई दें, जीवन सदा एक–सा ही रहा आए; उसमें कहीं कोई उतार – चढ़ाव ही न हो, हमेशा सुबह–शाम, रात या दोपहर ही रही आए, जीवन में हम हमेशा अकेले ही रहे आएँ, हर दिन हमें केवल एक ही तरह का खाने या पहनने को मिले तो फिर जीवन का महत्व ही क्या– आनन्द ही क्या? कल – कल बहता पानी, मंद –मंथर समीर, हवन हेतु उठती अग्नि की लपटें, उड़ते बादल, धुरी पर टिकी परिक्रमा कर दिन – रात का अहसास कराती धरा ही सुन्दर लगती है। ये विविधताएँ ही तो जीवन में रंग और बहार ला उसे मनमोहक बनाती हैं। विविधताओं के अभाव में विशेषकर मानव जीवन शुष्क और नीरस बनकर रह जाएगा, उसका कोई अर्थ न होगा। लेकिन फिर विविधता का मतलब अपनी – अपनी डफली, अपना – अपना राग अलापते हुए अपनी – अपनी,

43

सामाजिक समस्याओं का खुलासा: लघु कथाएँ

डॉ. रजित एम.

आजादी के बाद चरित्र और मूल्यों का क्षरण हमारे भारतीय समाज की निरन्तर घटने वाली सबसे बड़ी दुर्घटना बन गई है। आम आदमी आज भी सब कुछ खोने के लिए तैयार है पर अपने मूल्यों से डिगने को तैयार नहीं है। यही आम आदमी भ्रष्टाचार की सुनामी से ग्रस्त समाज में एकमात्र आशा की किरण है। यह आम आदमी किसी अखबार के पन्नों की कहानी नहीं बनता,अधिकार–शून्य होने पर भी मानवता के मूल्यों की स्थापना के लिए कटिबद्ध है। लघुकथा की संक्षिप्त–सी परिभाषा देनी हो तो कहा जा सकता है कि इसमें – इसके नाम वाले दो तत्व'लघु' तथा 'कथा' अवश्य होने चाहिए। लघुकथा अपने सामाजिक सरोकारों और साहित्यिक परिपक्वता को निभाने में अन्य विधाओं से कहीं भी पीछे नहीं है। किसी भी विधा में कम–से–कम शब्दों में गहन से गहनतम बात कहना आसान नहीं, बल्कि कठिन भी है। लघुकथा में शीर्षक से लेकर अंतिम वाक्य के अंतिम शब्द तक कसावट अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। हिंदी की लघुकथाओं का सामाजिक कैनवास विस्तृत होता जा रहा है। ये मानवीय हितों,दुखों और

परिवेश से पूरी तरह जुड़ गई है। मनुष्य और उसके आचरण के साथ ये लघुकथाएँ सम्मिलित होकर उनकी प्रकृति एवं प्रवृत्ति को यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती हैं। **रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'** के अनुसार लघुकथा में वर्तमान समय के गहन मंथन आत्मसंघर्ष अन्तर्द्वंद्व, मूल्यों के क्षरण एवं सत्ता द्वारा जनसाधारण की वंचना निहित है। सधे हुए लेखक के लिए कथ्य नया या पुराना नहीं होता बल्कि वह अपने कलात्मक स्पर्श से कथ्य की बारीकी के नए आयामों का सूत्रपात कर सकता है

लघुकथा में स्त्री

उपन्यासकार राजा राऊ ने अपने उपन्यास **'साँप और रस्सी'** में लिखा है–'स्त्री भूमि है वायु है,ध्वनि है, मन की सूक्ष्म परत है, है, गीत है, संगीत है, भाव है। स्त्री के विविध–रूपों से साहित्य भरा पड़ा है। माँ, बेटी, प्रेयसी, पत्नी को लेकर विभिन्न विधाओं में अनेक रचनाओं का सृजन हुआ है प्रेम करने वाली और घर चलाने वाली स्त्रियाँ नहीं होती तो यह दुनिया एक मरुस्थल के अतिरिक्त क्या होती। स्त्री अपने इन गुणों की बनावटी प्रशंसा के जाल में फँसकर प्रायः प्रताड़ित और इस्तेमाल होती रही है। स्त्री का श्रम और शरीर दोनों से शोषण होता है। दिनभर खटती औरत को रात को भी चैन नहीं। नारी–सुलभ जिन विशेषताओं का उल्लेख यहाँ हुआ है, उन्हीं के तहत स्त्री ममतामयी माँ है! माँ को लेकर अनेक मार्मिक लघुकथाएँ लिखी गई। वह संतान के लिए बड़ी–से–बड़ी बलि देने को तत्पर रहती है। हर धर्म में माँ एक–सी होती है और हर माँ का बस एक ही धर्म होता है संतान के प्रति माँ का प्यार निस्वार्थ सच्चा और तर्कातीत होता है। माँ,ममता, ममत्व शीर्षकों से लिखी गई कथाएँ इसका प्रमाण हैं।

आज भी लड़का–लड़की के बीच भेद किया जाता है। बेटी की तुलना में बेटे को वरीयता दी जाती है. (लड़का–लड़की' नरेन्द्र कौर छाबड़ा) लड़की (श्यामसुंदर दीप्ति) में एक बहुत ही महीन बात की ओर संकेत किया गया है। सुकेश साहनी की लघुकथा –'पितृत्व' में बेटी और बहू के बीच भेद की मानसिकता का चित्रण है। अनिन्दिता की **'अभियान'** और श्यामसुन्दर अग्रवाल की **'खरीदी हुई मौत'** दहेज की कुप्रथा पर प्रहार करती विचारपरक लघुकथाएँ हैं। 'कई बार औरत ही औरत की दुश्मन होती है चित्रा मुद्गल की **'नाम'** पति को परमेश्वर मान अन्याय सहती स्त्री

उनके घर का एक टुकड़ा खाकर मैं सफाईवाला हो गया!

'और नहीं तो क्या ?'

'और वे हमारे घर की सालों से रोटी खा रहे हैं वे क्यों नहीं ब्राह्मण हो गए ?'

दलित स्त्रियों के यौन शोषण से उत्पन्न लड़कियों को भी वे अपनी हवस का शिकार बना लेते हैं ई बड़े लोग खुद ही बीज बोते हैं और खुद ही फसल काट लेते हैं' **'बीज का असर'** (सतीश राठी) उच्च जातियों सामाजिक नैतिकता से डॉ. रामकुमार घोटड़ ने. **'एक युद्ध यह भी'** कथा में दलित के प्रतिकार को विशिष्ट ढंग से दर्शाया है। झीमती के पेट में दो भ्रूण पल रहे थे, एक बलात्कारी ठाकुर विचित्रसिंह का व दूसरा अपने पति बदलू का। वे आपस में लड़ रहे हैं।

'सुरक्षित सीट' सुसवर्णों द्वारा जाति व राजनीति के मेल से पूरन सिंह गाँव में अपना वर्चस्व बनाए रखने की सरल व सशक्त रचना है। गाँव में सवर्ण अवर्णों की तुलना में एक प्रतिशत होने पर भी प्रधानी सवर्णों के पास ही रहती है। सुरक्षित सीट घोषित होने के बाद भी सरपंच संतो चमारिन पंडित जी के घर झाड़ू–पोंछा ही कर रही है। गाँव में हर हाल में जाति ही सर्वोच्च है–यह रचना इस तथ्य को सामने लाती है। डॉ. रामकुमार घोटड़ की **'एक युद्ध यह भी'** रचना दलित संदर्भों में संघर्ष–चेतना को प्रतीक रूप में उभारते हुए सवर्णों की संकीर्ण मानसिकता पर छींटाकशी करती है। रीढ़ (सवर्णों की सदियों से चली आ रही मानसिकता की (सतीश दुबे) दस्तावेजी रचना है। ठाकुर पिता अपने पुत्र को दलितों के बारे में कहते हैं–"गरीब और गरीबी गाँव की रीढ़ है। इन लोगों से इनकी प्रगति... की बात करो, पर होने मत दो।"

मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ

आज के भौतिकवादी युग में मध्यवर्ग भीतर से तो दुखी है। वह उपेक्षा एवं अलगाव का जीवन जी रहा है। लेकिन दूसरों को दिखाने के लिए वह हँसी का मुखौटा लगाए घूम रहा है। इस विसंगति को फाल्ट, आइना, घर एवं बोंजाई नामक लघुकथा में देखा जा सकता है। अभाव के कारण व्यक्ति का सही रूप कभी सामने नहीं आ सकता। अभाव से तात्पर्य है यापन की

हैसियत भी न – एक सामान्य जीवन हो पाना। पुष्पलता कश्यप ने **'कागज की नाव'** में जीवन के लिए न्यूनतम सुविधाओं के लिए यापन– संघर्षरत अभावग्रस्त परिवार की बेबसी को विभिन्न छोटी–छोटी स्थितियों के सन्दर्भ में– सधी हुई भाषा में अनुस्यूत किया है। दहेज दानव जैसी सामाजिक कुरीतियों ने पहले की अपेक्षा आज कहीं अधिक मारक स्थिति उत्पन्न कर दी है। नीरव ने **'कत्ल होता सपना'** और **'नालायक'** लघुकथाओं ने इस विषय को गंभीरता से अभिव्यक्त किया है

साहित्य की किसी भी विधा का महत्त्व इस बात से तय होता है कि वह विधा समग्रतः अपने साहित्यिक उद्देश्य में कहाँ तक सफल है। इस परिप्रेक्ष्य में लघुकथा के विधागत योगदान का मूल्यांकन करना हो तो हमें उसके फलक पर छाए तमाम सृजन बिन्दुओं पर दृष्टि डालनी होगी–, जो फलक की व्यापकता के भी कारण बनते हैं।

के मानस पर व्यंग्य करती प्रभावी लघुकथा है। रामेश्वर काम्बोज –हिमांशु की. स्कीन टेस्ट. में औरत के शोषण की विभिन्न स्थितियों का चित्रण है।

'एक पवित्र लड़की' बलात्कार पीड़िता रंजना की उस सोच को व्यक्त करती है जिसमें बलात्कार पीड़िता को समाज के द्वारा यह अहसास कराया जाता है कि वह किसी के लायक नहीं रही. अपवित्र हो गई। लेकिन गौतम ने उससे कहा क्या उस वहशी दरिन्दे ने तेरे शरीर के साथ तेरा मन भी लूट लिया? बलात्कारी शरीर को ही अपवित्र कर सकता है, मन को नहीं। 'उस स्त्री की अंतिम इच्छा' भारतीय स्त्री की उस विडंबना को व्यक्त करती हैं जिसमे उसे एक ओर तो देवी रूप में पूजा जाता है दूसरी ओर दहेज के लिए या गर्भ में ही बोझ समझ कर खत्म कर दिया जाता है। इस लघुकथा में सरल शब्दों में रंजना के गहरे दुःख को अभिव्यक्ति दी गई है। सुकेश साहनी की 'कसौटी' इंटरनेट के युग में खुलेआम स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों की उस माँग की पड़ताल करती है जो इस आधुनिक युग में वर्जनाओं को समाप्त करने की घोषणा करने पर उतारू लगते हैं। सॉरी सुनन्दा यू हैव नॉट क्वालिफाइड। यू आज नाइंटी फाइव परसेंट प्युअर। वी रिक्वाअर एटलीस्ट फोर्टी परसेंट नॉटी यह कथा भारतीय संस्कारों के कमजोर पड़ने को दर्शाती है; दूसरी भाषा के शब्दों के प्रयोग ने भी लघुकथा के तारतम्य को प्रभावित नहीं किया है।

भूख और गरीबी की समस्या

लघुकथा जीवन्त क्षणों को साफ–सुथरी और ताकतवर भाषा में व्यक्त करने वाली ऐसी विधा है जिसंका शब्दों के संयम और भाषा के विकास से सीधा संबंध आता है। सीधी–सादी भाषा को आधार बनाकर कुछ शब्दों में जीवन की उथल–पुथल को व्यक्त करना लघुकथा का एक तरह से अपना स्वभाव है–

–माँ भूख लगी है, रोटी दे दो'?

–रोटी? अभी नहीं है बच्चे!

–कब होगी...?

–जब तेरे बाबा आएँगे।

–बाबा तो कई दिनों से नहीं आए।

–वह जरूर आएँगे मेरे बच्चे।

–अच्छा तो तुम कोई और चीज दे दो।

–घर में कोई चीज नहीं है।

–फिर पैसा ही दे दो

–पैसा भी नहीं है।

–पर मुझे भूख लगी है, मैं क्या खाऊँ?

–तो मुझे खा ले राक्षस।

–मगर कैसे.......

(माएँ और बच्चे/रमेश बतरा)।

आज गाँव की गुमटी में पेप्सी और कोला तो उपलब्ध है, मगर ग्रामीणों की बुनियादी आवश्यकताओं की वस्तुएँ नहीं। जरूरत है चालाकी से की जा रही इस सौदागिरी को पहचानने की। विदेशी सेटेलाइट चैनलों के शब्दकोष में 'जनहित' शब्द नहीं है। वहाँ सिर्फ मुनाफा है। वे अपने अंशधारकों के प्रति उत्तरदायी हैं, दर्शकों के प्रति नहीं।

दलित संघर्ष

हिंदी लघुकथा ने दलित जीवन के विभिन्न चित्र प्रस्तुत किये हैं। दलित साहित्य में दलित संघर्ष की अभिव्यक्ति काफी तीखी रही है उसे और तल्ख होने की जरूरत है क्योंकि मनुष्य के दुराग्रह इतनी आसानी से नहीं मिटते उसके लिए विमर्श के साथ सामाजिक आंदोलन की भी आवश्यकता है, छुआछूत की बात 'अछूत' (यास्मीन। इस भेदभाव पर अछूत कथा में व्यक्त हुई है मजदूरनी का तर्क बड़ा सशक्त है, 'आपके घर में गेहूँ छू दिया तो उसका सत्यानाश हो गया और खेत में हम ही लोगन के बिरादर काटत, ढोवत है, बोरा मा भरत है तब नाहीं सत्यानाश होता है। विवेकहीन भेदभाव को युगों से ढोते रहे लोगों में अब कुछ समझ पैदा होने लगी है और उसका जवाब देने का साहस भी उत्पन्न हुआ है।

छोटे से बच्चे ने सफाईवाले के घर की रोटी क्या खाई, माँ विफर गई 'रोटी का टुकड़ा' (भूपिन्दर सिंह) कथा का यह वार्तालाप देखें।

"जा तू भी सफाईवाला बन जा, तूने उनकी रोटी क्यों खाई?

Visit us at www.taxshilabooks.in

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक व लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

© सुरक्षित

I.S.B.N. : 978-81-7965-282-4

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : ₹990/-

प्रकाशक :
टी.एस. बिष्ट
तक्षशिला प्रकाशन
98-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-43528469, 23258802
टेलीफैक्स : 011-23258802
ई-मेल : info@taxshilabooks.in, taxshilabooks@gmail.com

मुद्रक :
बालाजी ऑफसेट
दिल्ली-110032

Sahitya aur Samkaleen Chintan

By : Sanjay L. Madar

समर्पण

श्री आर. एफ. नीरलकट्टी जी को...

समकुलपति, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, मद्रास

अध्यक्ष, प्रशासन समिति, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

प्रो. संजय एल. मादार

एम.ए., बी.एड्, एम.फिल,
पीएच-डी., नेट, सेट

www.taxshilabooks.in

ISBN - 978-81-7965-282-4

तक्षशिला प्रकाशन

98-ए,हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली 110002

दूरभाष: 011-43528469, फैक्स: 011-23258802

e-mail: info@taxshilabooks.in
taxshilabooks@gmail.com

तक्षशिला

9788179652824

तक्षशिला

साहित्य और समकालीन चिंतन

प्रो. संजय एल. मादार